धार्मभिः । उर्दस्थामम्ताँ मन् VS. p. 59, 15. VS. 34, 33. म्रिभिगुरूमार्गमं वि-स्रकोर्नेण धार्मा R.V. 10, 166, 4. प्राणा म्रादित्यधामानः, मङ्गिरेगः Кरम्ध. 20, 11. सक्स • AV. 4,18,4. Pragapati TBs. 2,8,1,5. तव धाम वैज्ञवम् Ragu. 11,85. राज्ञ: संशर्गा धाम शरीरं धर्मसाधनम् (?) Kam. Nitis. 6, 4. प्री-द्दाम<sup>o</sup> Inschr. in Journ. of the Am. Os. S. 7,9, Çl. 30. सक्ते न जना ऽप्य-धःक्रियां किम् लोकाधिकधाम राजकम् (= राजसम्कः) Kia. 2,47. – h) Glanz, Licht vgl. ध्यामन्)ः यद्स्यान्यद्रश्मिशतमूर्धमेव व्यवस्थितम् । तेन देवशरीराणि सधामानि प्रपद्यते ॥ JA64.3, 168. क्रिट्श्रधामन् adj. RA04. 18,22. 6,6. धाम्रा निधि: (vgl. धामनिधि) सूर्य: VARIH. LAGHUÉ. 1, 1. र ली-चधामनिकरातृपान् प्र Амав. 86. व्हाटकाब्जयरलस्रमधामशाभा (viell. वस-্রিন্ন <sup>c</sup> zu lesen; vgl. MBн. 1, 5974 und 2. ঘানন্) ১ শবন্ Rর্রেন-Tab. 3,529. म्रमर्पतिधनधीर्माचत्राः पताकाः PRAB. 26,8. उन्द्रधामधवल 73, 7. 81, 10 (nach Schol. 2 ist धामाधिप = सर्य). 116, 1, v.l. Buig. P. 1, 1, 1. 4, 9, 6. प्रत्य-म्धानन् adj. 3,26,3. म्रहेश द्वपमहेश धान म्रहेश म्रस्या नवं वयः 8,9,2. त्मी-ष्मः। अक्दं सर्वयोधानां धाम सर्वधन्ष्मताम् so v. a. unter atten Bogenträgern hervorstrahlend MBH. 6,498. Hierher gehören wohl auch die Stellen: भुङ्के य (शिव:) एका विभूर्तगता विश्वमध्या (sic) धामा धाम सु-कृतित्वात्र धृःयः स्रक्षारः ७४२१. धामाशभागस्य तथा क् वेदा यथा च शाखा हि महोतिहस्य MBn. 3, 1675. — 2) m. N. pr. eines der Saptarshi im 4ten Manvantara Hariv. 426 (Langlois: धात्राः); vgl. ड्यातिधामन्. — Vgl. ऋत॰, त्रि॰, प्रिय॰, विश्व॰, स्थिर॰.

2. धामन् n. fehlerhafte Schreibung für 4. दामन् VS. 6, 22. Çinen. Çr. 8, 12, 11.

धामनिका (viell. von धमनी) f. Solanum Jacquini Willd. RATNAM. 7. धामनिधि (1. धामन् 1, h. + निधि) m. die Sonne Gațadu. im ÇKDu. Verz. d. Oxf. H. 184,b, 15.

धामनो f. Hemionitis cordifolia Roxb. Ratnam. 10. Nach Çabdak. im ÇKDR. = धमनो.

धामभाज् (1. धामन् + भाज्) adj. den Sitz innehabend: धामभाज्ञो देवाः प्राथ्यभाग्वनस्पतिः । धाम वै देवा यज्ञस्याभज्ञल पाष्टः पितरः Çâñah. Ba. 10,6.

धामश्रम् (von 1. धामन्) adv. je nach den bestimmten Stätten oder je nach der Ordnung: तेषामिष्टान् विहितानि धामुश: KV. 1,164, 15.

धामतीच् (1. धामन् + ताच्) adj. an die bestimmte Stätte sich haltend, von Indra RV. 3,51,2.

धानार्गित्र m. 1) = घाषक Luffa foetida Cav. oder eine ähnliche Pflanze AK. 2,4,4,5. H. an. 4,304. fg. Med. v. 60. = पीतघोषा Ratham. 64. — Suga. 1,144,12. 160,3. 2,89,4. 174,14. 482,7. — 2) = ज्ञानार्गि Achyranthes aspera AK. 2,4,3,7. H. an. Med.

धार्य nom. ag. und act. von 1. धा Schol. zu P. 3,1,141.139. 6,1,159. 7,3,33. Vop. 26, 37.

धायके nom. ag. von 1. धा Schol. zu P. 7,3,33.

धायम् (von 3. धा oder 1. धि) 1) adj. ernährend, pflegend, erhaltend: सक् स्न॰ TAITT. ÅR. 1,21,3.24,11. Vgl. श्राहि॰, काहु॰, गोा॰, भूहि॰, विश्व॰, क्रि॰ und u. जनधा. Im ÇKDR. wird aus dem Adhivasamantra folgende Formel augeführt: भूर्रास भूमिर्स्यदितिर्मि विश्वस्य धाया (lies: धाया:). — 2) nur im dat. als infin. gebraucht. a) das Saugen, Schlürfen; das Sichsättigen: (पिबा सामं) मदाय क्यूंतायं ते तुविष्ट्रमाय् धायसे हुए. 1,130,2. 2,17,2. साम: पुनान इंन्ह्रियाय घायंसे 9,86.8.70,5. 1,141,6. — b) Brnährung: मातेच यहर्स वर्ने वर्ने वर्ने च प्रेर. 5, 15,4. इर्षमध्याम् धायंसे 70,2. यं मत्यः पुरुस्प्हं विद्विद्यस्य धायंसे 7,6. स्रा यस्ते उग्ने धायंसे वर्ते । प्रातकंट्या उवृत्राय धायंसे किरिश्चिन्मलं मनेसा वनाषि तम् 1,31,13. स्वः स्वाय धायंसे कृणुतामृत्विगृत्वित्रम् 2.5,7. Etwa so v. a. Stillung, Befriedigung: स्र्यं मित्रस्य वर्त्तणस्य धायंसे 1,94, 12. Dunkel ist: स्रतमंकी समेते धायंसे धुः 3,38,2.

1. धापु (von 1. धा) adj. freigebig: यस्मै धापुर्दधा मर्त्यायार्भक्तं चिद्रजते गेक्सं स: १.४४. 3,30.7.

2. धार्यु (von 3. धा) adj. etwa edax (Si.) = धारकाः (इन्द्रस्य) क्री सूर-या धाय प्र. 7, 36, 4.

धाट्य gaṇa दिगादि zu P. 4.3,54. Davon धाट्य = धाट्य भवः ebend. धाट्या ऋतिज्ञः Vop. 26,11. am Ende eines comp. gaṇa वर्ग्यादि zu P. 6, 2,131. — 2) f. धाट्या (von 1. धा), näml. ऋच् Zusatzvers (dergleichen in gewissen Litaneien eingeschoben werden), = मामिधनी P. 3,1,129. Vop. 26,11. AK. 2,7,21. H. 827. = धीयते उन्या समित् Sidde. K. zu P. a. a. O. मानवी ऋची धाट्ये कुर्यात् TS. 2,2,10,2. Air. Ba. 3,17. 18. 24. 31. ता हैके पुरस्तात्प्रमाधाना शंसत्ति धाट्या इति वदत्तः 6,21. 8,2. Çat. Ba. 1,4,1,37. Çâñkii. Ça. 7,21,8. 10,13,10. घट्याव्रचे VS. 19,24 ist nur ein Druckfehler; vgl. VS. Paât. 4,150 in Ind. St. 4,262.

1. धार् (von धर्) 1) adj. am Ende eines comp. haltend, tragend: मृत्यारं गुरुं खुला MBB.1, 1690. Vgl. झमृग्धारा 2, लर्पा॰, लाएउ॰(?), इस्रः, जला॰, तुला॰, तूणा॰, द्राउ॰. सूत्रः . In den unter तायधार् aus MBB. und R. angeführten zwei Beispielen ist तायधारा als f. zu fassen und gehört zu 1. धारा. subst. der Erhalter, Bein. Vish nu's H. ç. 70. — 2) m. Schuld (vgl. धर् 18) H. an. 2,431. MBO. r. 31.

2. धार् (von 1. धार्ग) 1; adj. in Strömen —, als Regen herabfallend: उर्क Sugn. 1,170, 1. — 2) m. Platzregen, = जलधरामार्वर्षण H. an. 2,431. धनवतीयधारेण ववर्ष कनजाम्बुमि: Haniv. 6333. auch Frost (wohl Schnee) Wils. nach Anekarthak.

3. धार् m. 1) eine Art Stein Med. r. 31, wo धारो या o zu lesch ist. — 2) Rand, Grenze (प्राञ्त) Çabdar. im ÇKDa.; vgl. 2. धारा. — 3) == गर्भी-7: ebend. Tiefe Wils.

1. धार्क (von धर्) 1) adj. am Ende eines comp. haltend, trayend n. s. w.: मृत MBH. 1, 1691. नट: स्त्रीविशधार्का: H. 329. Vgl. कुल ं, हित ं, रेह ं, नाम ं. कनकधार्का: R. Gobb. 2, 90, 14 übersetzt Gobb. durch quei che scernon l'oro greggio dalla terra; bei Schl. (83, 13) lesen wir st. dessen कम्बलधावका: — 2) m. a) Behälter: वस्त्रधारकोपविष्ट Sugn. 2,55,11. — b) Wasserkrug Devl-P. im ÇKDB.

2. धार्क am Ende eines adj. comp. von धारा Schneide; s. त्रि ं धार्का f. die weibliche Scheide: म्राकृति गुने पद्मा नि गंतगलीति धार्मका vs. 23,22. Çat. Ba. 11,6,8,10.

धार्षा (von धर्) 1) adj. f. ई tragend, erhaltend, ausrechterhaltend, bewahrend: (भूम:) लोकधार्षाी Taitt. Ån. 10,1,8. (लोकपितर:) धार्षाः सर्वलोकानाम् MBn. 12, 12751. Sugn. 1,169,9. एकं चक्रं वर्तते दादशारम् — स्तस्य धार्षाम् MBn. 1,727. von Çiva 12,10424. 14,208. पाह श्रापाधार्षी den Fuss schützend Uééval. zu Unids. 1,87. श्रुतधार्षा ये diejenigen, welche das Gehörte im Gedächtniss bewahren, Buig. P. 2,7,46